चौहान राजाओं का नव–वैष्णव धर्म को संरक्षण

डॉ. बलवीर चौधरी

सह आचार्य (इतिहास)
राजकीय महाविद्यालय जोधपुर

चौहानों के इतिहास के सम्बन्ध में पृथ्वीराज रासो, पृथ्वीराज विजय महाकाव्य, अभिलेखों एवं ताम्रपत्रों से महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। उनके इतिहास का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि चौहान शासकों की व्यक्तिगत धार्मिक मान्यता चाहे कुछ भी रही हो, लेकिन वे सामान्य रूप से धर्म सहिष्णु थे। इसलिए उनके शासन काल में वैदिक, शैव, वैष्णव, शाक्त और जैन धर्म का उत्थान हुआ।

हमारी धार्मिक परम्परा के अनुसार वह सम्प्रदाय जिसके आराध्य देवता विष्णु है, वैष्णव धर्म कहलाता है।[1] वैदिक साहित्य के अनुसार ऋग्वैदिक काल में विष्णु की पूजा सूर्य के रूप में की जाती थी।[2] लेकिन उत्तर वैदिक काल में विष्णु एक स्वतंत्र देवता के रूप में पूजे जाने लगे।[3] छठी शताब्दी ई. पू. में बौद्ध और जैन धर्मों का उत्थान हुआ, जिससे वैष्णव धर्म दूर पृष्ठ भूमि में चला गया।[4] लेकिन पाणिनि (500 ई. पू.) के सूत्र (4.2.34) के भाष्य में पतंजलि ने स्पष्ट रूप से वासुदेव का अर्थ ईश्वर का नाम माना है।[5] मेवाड़ के घोसुण्डी अभिलेख में संकर्षण एवं वासुदेव उपासना हेतु निर्मित मण्डप के चारों ओर एक प्राचीर बनवाने का उल्लेख मिलता है।[6] वासुदेव के उपासक भागवत कहलाते थे। वैसे प्राचीन काल में विष्णु, नारायण और कृष्ण एवं राम का समन्वय होने के संकेत विभिन्न ग्रन्थों में मिलते हैं।[7] मेगस्थनीज ने मथुरा क्षेत्र में वासुदेव की भक्ति लोकप्रिय होने के संकेत दिये हैं।[8] मौर्योतरकाल में वैष्णव धर्म राजस्थान में भागवत धर्म के नाम से लोकप्रिय हुआ। गुप्त सम्राटों के शासन काल में पुराण साहित्य रचा गया, जिनसे हमें विष्णु के अवतारों की जानकारी मिलती है।[9] गीता[10] ने भी प्रचारित किया कि जब–जब संसार में अधर्म का प्रसार हो जाता है तो उसे नष्ट करने धर्म की पुनःस्थापना के लिए ईश्वर अवतार लेता है। गुप्त काल तक विष्णु के दस अवतार प्रसिद्ध थे।[11] इनमें से कुछ अवतारों का विवरण शतपथ ब्राह्मण में भी मिलता है।[12] इन अवतारों में वराह और कृष्ण की पूजा का अधिक प्रचलन गुप्तकाल में हुआ। राम की पूजा का प्रारम्भ छठी शताब्दी ई. के बाद हुआ।[13] अवतारों में बुद्ध का नाम सम्मिलित करने का कारण धार्मिक क्षेत्र में समन्वयकारी प्रवृत्ति का उत्थान होना मात्र था।

राजपूत काल में चौहान साम्राज्य में वैष्णव धर्म भी अन्य धार्मिक सम्प्रदायों की तरह लोकप्रिय रहा। डॉ. दशरथ शर्म का मत है कि पूर्व मध्यकालीन राजस्थान में बौद्ध धर्म अवनत होने का कारण यह था कि उनके धर्म और दर्शन की अच्छाइयों को हिन्दूधर्म ने गुप्तकाल में ही ग्रहण कर लिया था और अब बुद्ध को भी अवतारों की श्रेणी में रखा गया, जिससे वैष्णव धर्म लोकप्रिय हुआ।[14] अढाई दिन के झोपड़े (अजमेर) से प्राप्त एक लेख जिसे डी. सी. सरकार ने सम्पादित किया है उसमें विष्णु के कूर्म, मत्स्य, वराह, नरसिंह, वामन, जमदग्न्य, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।[15]

चौहान नरेश विष्णु के भक्त थे उनके राज्य में उनकी भक्ति निरन्तर थी। राजपूताना म्यूजियम अजेमर में शेषशायी विष्णु[16] (8–11 वीं शताब्दी) और त्रिपुरूष प्रतिमा आज भी सुरक्षित है।[17] हर्षनाथ (सांभर) से विष्णु की बैठी हुई और बाघरा (अजमेर) से विष्णु की कमलासन प्रतिमाएँ प्राप्त हो चुकी हैं।[18] चौहान शासकों में से कुछ राजाओं ने भगवान विष्णु को अपना आराध्य देव बनाया था। पृथ्वीराज विजय महाकाव्य से ज्ञात होता है कि चामुण्डराज (1040–65 ई.) ने नरवर में वैष्णव मन्दिर का निर्माण करवाया था।[19] चौहान शासक अर्णोराज भी भगवान विष्णु के प्रति श्रद्धा रखता था।[20] सोमेश्वर ने तो अपनी राजकीय आवास में ही विष्णु का मन्दिर स्थापित कर दिया था।[21] पृथ्वीराज द्वितीय के सम्बन्ध में (1165–1169 ई.) आभिलेखिक प्रमाण से ज्ञात होता है कि उसने भगवान मुरारी की कृपा प्राप्त करने हेतु प्रार्थना की थी।[22] मुरारी को विष्णु का ही स्वरूप माना जाता है। इसी प्रकार नाडोल के चौहान राजा रतनपाल भी विष्णु के भक्त थे।[23] इसी वंश के शासक कीर्तिपाल ने विष्णु की उपासना श्रीधर के रूप में की थी।[24] चौहान शासकों के राज्यकाल में विष्णु की उपासना अपराजितेश के रूप में भी की जाती थी।[25] इस प्रकार वे सभी लोग जो विष्णु, कृष्ण, मुरारी, श्रीधर और अपराजितेश के भक्त थे उनकी गणना वैष्णवों में की जाती थी।

चौहान इतिहास के लेखक डॉ. आर. बी. सिंह का मत है[26] कि बौद्ध धर्म के पतन के पश्चात् चौहान साम्राज्य में वैष्णव धर्म अपने नये स्वरूप में पुनः अवतरित हुआ, जिसे नव वैष्णव धर्म कह कर पुकारा जाता है। नव वैष्णव धर्म की विशेषताएँ इस प्रकार थी–

1. इनमें जैन और बौद्ध धर्म के अहिंसा के सिद्धान्त का कट्टरता पूर्वक अपनाया गया।

2. जैन धर्म के प्रभाव से नव वैष्णव धर्म में माँस भक्षण पर रोक लगा दी गई।
3. यज्ञों में हिंसा को अस्वीकृत करते हुए अहिंसक यज्ञ करने पर जोर दिया गया।
4. बौद्ध धर्म से समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से बुद्ध की गणना विष्णु के दशावतरों में की जाने लगी। पृथ्वीराज विजय महाकाव्य में भी बुद्ध को विष्णु का अवतार कहा गयाहै। इस प्रकार अब भगवान बुद्ध हिन्दू देवताओं की श्रेणी में आ गये।
5. कुछ लोग ऐसे थे जो बौद्ध धर्म छोड़कर पुनः हिन्दू धर्म में चाहते थे उनके लिए कृष्ण सर्व सुलभ देवता बन गये क्योंकि उनकी शिक्षाओं में हिंसा का महत्त्व नहीं था।
6. नव वैष्णव धर्म में जैन धर्म के आत्म संयम और आत्म त्याग के सिद्धान्त को अपनाया गया था। लेकिन उनमें अन्तर केवल इतना ही रह गया कि जैन धर्म निर्वत्ति मार्ग में जोर देता था और वैष्णव धर्म प्रवृत्ति मार्ग पर। कुछ लोगों ने तो कृष्ण की लीलाओं को भी काम–क्रीड़ा की दृष्टि से देखा और उस पर ग्रंथ ही रच डाले। गीत गोविन्द में राधा–कृष्ण के प्रणय प्रसंगों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया, लेकिन चौहान राजाओं के समय विष्णु और कृष्ण भक्ति इतनी अधिक लोकप्रिय हो गई कि लोग स्वयं को भागवत या वैष्णव कहने में गर्व का अनुभव करने लगे।
7. बौद्धों और जैनों को सर्वाधिक शिकायत हिंसक यज्ञों से थी जिसका निराकरण कृष्ण ने गीता में कर दिया था। गीता के तृतीय अध्याय में कृष्ण अर्जुन को आसक्ति रहित होकर यज्ञ निमित्त भली–भाँति कर्म करने पर जोर दिया। (3.9) कृष्ण ने यज्ञों का विरोध करने की बजाय देवताओं के पूजन रूपी यज्ञ का अनुष्ठान करने, तपस्या यज्ञ करने, योगरूपी यज्ञ करने, स्वाध्याय रूपी ज्ञान यज्ञ करने की प्रेरणा दी। जिससे वैष्णव धर्म सर्व सुलभ हो गया।[27]
8. नव वैष्णव धर्म में भारतीय दशावतरों में बुद्ध की गणना करनी प्रारम्भ कर दी थी, जिसका हम उल्लेख कर चुके हैं। प्राचीन काल में विष्णु प्रतिमा के प्रायः दो या चार हाथ दर्शाये जाते थे लेकिन नव वैष्णव धर्म में विष्णु के चौबीस (24 जैन तीर्थंकर) या चौदह हाथ मूर्तिकार उत्कीर्ण करने लगे। जैन धर्म के त्रिरत्न महत्त्वपूर्ण होते है। अतः अब तीन मुँहवाली पुरुष प्रतिमाएँ बनने लगी जिनके मध्य में विष्णु और उनके दोनों ओर वराह एवं नृसिंह अवतार को उकेरा जाने लगा।[28] त्रिपुरुष प्रतिमा के अजमेर के राजपूताना संग्रहालय दर्शन किये जा सकते हैं।

उपर्युक्त विवरण से लगता है कि चौहान नरेशों के साम्राज्य में ही नव वैष्णव धर्म लोकप्रिय हुआ। इस सम्बन्ध में हमारा विचार प्रो. आर. बी. सिंह से कुछ भिन्न है। क्योंकि वैष्णव धर्म में अहिंसक यज्ञ को महत्त्व देना तो गीता के लेखन के साथ ही प्रारम्भ हो गया था और बुद्ध को अवतारों की श्रेणी में पुराण लेखन अर्थात् गुप्त काल में ही सम्मिलित कर लिया गया था। जहां तक कृष्ण पूजा को लोकप्रिय थी जितनी बाद में चौहान साम्राज्य में थी। मेवाड़, मारवाड़ और हाड़ौती (कोटा) क्षेत्र में कृष्ण पूजा के उदाहरण चौहानों से पूर्व ही मिलने लगते हैं।[29] ऐसी स्थिति में यह कहना अनुचित होगा कि नव वैष्णव धर्म चौहान शासकों के समय राजस्थान में फैला। हमें प्रो. आर. बी. सिंह के कथन में थोड़ा संशोधन करना होगा तब इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है नव वैष्णव धर्म के बीज राजस्थान में चौहान के उत्थान से पूर्व ही विद्यमान थे लेकिन बौद्ध धर्म के अवसान के पश्चात् उसके रिक्त स्थान की पूर्ति करने की क्षमता केवल नव वैष्णव धर्म ही थी इसलिए केवल चौहान साम्राज्य ही नहीं सम्पूर्ण राजस्थान इस नवीन सुधारवादी एवं सरल वैष्णव विचार धारा के प्रभाव में आ गया। डॉ. दशरथ शर्मा भी इसी मत के प्रति सहमत प्रतीत होते हैं।[30] क्योंकि पूर्व मध्यकाल में विष्णु के राम और कृष्ण स्वरूप अधिक लोकप्रिय हुए थे।

सन्दर्भ

1. मिश्र, जयशंकर : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृष्ठ संख्या : 607, पटना, 1974
2. ऋग्वेद, 3.63.10
3. मिश्र, पूर्वो, पृ. 579, भण्डारकर, आर.जी, : वैष्णव, शैव एवं अन्य धर्म पृ. 49, वाराणसी, 1978
4. सिंह, आर.बी. हिस्ट्री ऑव द चाहमान्स, पृष्ठ संख्या : 375, वाराणसी, 1964
5. भण्डारकर, पूर्वो, पृष्ठ संख्या : 12
6. वही, पृष्ठ संख्या : 4, पुरोहित, सोहन कृष्ण, मेवाड़ के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का प्रमुख स्त्रोत : नगरी का घोसुण्डी अभिलेख (शोध प्रबन्ध), पृष्ठ संख्या : 52–59, शोधपत्रिका उदयपुर (वर्ष 55 अंक 1–2) 2005
7. मिश्र, पूर्वो , पृष्ठ संख्या : 610–615
8. भण्डारकर, पूर्वो. पृष्ठ संख्या : 13
9. शर्मा, जवाहरलाल, श्रीमद् भागवत का सांस्कृतिक अध्ययन, पृष्ठ संख्या : 127, जयपुर 1984
10. श्रीमद्भागवतगीता, 4.7 गोरखपुर, सं. 2054
11. भण्डारकर, पूर्वा, पृष्ठ संख्या : 61
12. शतपथ ब्राह्मण, 2.8.1.1, जैमिनीय ब्राह्मण, 3.27.2
13. मिश्र, पूर्वो, 617, 623
14. शर्मा, दशरथ राजस्थान थ्रु द एजिज, खण्ड प्रथम, पृष्ठ संख्या : 415 बीकानेर 1966

15. वही, पृष्ठ संख्या : 374
16. वही, पृष्ठ संख्या : 369
17. वही, पृष्ठ संख्या : 397
18. वही, पृष्ठ संख्या : 369
19. जयानक, पृथ्वीराज विजय महाकाव्य, पृष्ठ संख्या : 68 (सं. गो. ही. ओझा) अजमेर 1940
20. सिंह आर. बी. पूर्वो. पृष्ठ संख्या : 374
21. जयानक, पूर्वो. पृष्ठ संख्या : 8, 65, 68
22. इण्डियन एण्टिक्वेरी, 1912, पृष्ठ संख्या : 17
23. एपिग्राफिया इण्डिका, 9 पृष्ठ संख्या : 305
24. वही, 7 पृष्ठ संख्या : 67
25. एडपिग्राफिया इण्डिका, 7 पृष्ठ संख्या : 74
26. सिंह, पूर्वो, पृष्ठ संख्या : 374–376
27. श्रीमद्भगवदगीता, 3.9, 10, 11
28. सिंह, पूर्वो, पृष्ठ संख्या : 377
29. शर्मा, दशरथ राजस्थान थ्रु द एजिज, खण्ड प्रथम, पृष्ठ संख्या : 70, 368–374
30. वही, पृष्ठ संख्या : 373